8

काँवड़ यात्रा का बढ़ता प्रचलनः एक तुलनात्मक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

*प्रियंका कपूर**

काँवड़ यात्रा, जो कभी एक साधारण एवं बड़े पैमाने पर स्थानीय धार्मिक तीर्थयात्रा हुआ करती थी, हाल के वर्षों में पूरे उत्तर भारत में एक व्यापक सांस्कृतिक आयोजन के रूप में विकसित हो गई है। यह शोध पत्र इमाइल दुर्खीम, मैक्स वेबर, युरगेन हेबरमास एवं आन्तोनियो ग्राम्शी के तुलनात्मक सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य से इस परिवर्तन के समाजशास्त्रीय प्रभावों की पड़ताल करता है। इसमें यह तर्क दिया गया है कि यात्रा की बढ़ती लोकप्रियता धार्मिक अभिव्यक्ति, पहचान की राजनीति, सार्वजनिक स्थानों के उपयोग, मीडिया के प्रभाव तथा धर्मनिरपेक्षता की अन्तर्क्रिया में व्यापक सामाजिक परिवर्तनों का प्रतीक है। यह शोध पत्र यात्रा को एक ऐसे स्थल के रूप में बहुआयामी समझ प्रदान करता है जहाँ परम्परा एवं आधुनिकता, भक्ति एवं अनुष्ठान, आस्था एवं राजनीति एक-दूसरे से जुड़ते हैं।

[**प्रमुख शब्द :** काँवड़, काँवड़ यात्रा, हिन्दू तीर्थयात्रा, सांस्कृतिक आयोजन, गंगा नदी, युवा पुरुषत्व, भक्ति उत्साह, पौराणिक कथा, हिन्दू राष्ट्रवाद।]

1. परिचय

काँवड़ यात्रा लाखों भगवान शिव भक्तों, जिन्हें 'कांवड़िये' कहा जाता है, द्वारा की जाने वाली एक वार्षिक तीर्थयात्रा है। काँवड़ यात्रा एक पारम्परिक हिन्दू तीर्थयात्रा है जिसमें भक्त मुख्यतः पैदल यात्रा करके गंगा नदी से पवित्र जल लाते हैं—अक्सर हरिद्वार, गौमुख या गंगोत्री से—तथा इसे भगवान शिव को अर्पित करते हैं, विशेष रूप से श्रावण (जुलाई-अगस्त) के महीने

* **सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, जैन कन्या पाठशाला (पीजी) कॉलेज, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)।**

में अपने गृहनगर के शिव मन्दिरों में। इसके ऐतिहासिक विकास को निम्नलिखित उप-शीर्षकों के अन्तर्गत खोजा एवं समझाया जा सकता है—

- **प्राचीन जड़ें**—काँवड़ यात्रा की जड़ें हिन्दू पौराणिक कथाओं में हैं। किंवदंतियों के अनुसार, भगवान शिव ने समुद्र मंथन के दौरान हलाहल विष पिया था तथा उन्हें शीतलता प्रदान करने के लिए, भक्तों ने गंगा जल अर्पित करना शुरू किया। प्रारम्भ में, यह एक स्थानीय एवं व्यक्तिगत प्रथा थी, जो मुख्यतः उत्तर भारत के कुछ शैव समुदायों तक ही सीमित थी।

- **मध्यकालीन काल**—यह प्रथा मध्यकालीन काल में भी जारी रही तथा अधिकांशतः एक छोटे पैमाने का ग्रामीण धार्मिक अनुष्ठान बनी रही, जिस पर राज्य या समाज का बहुत कम ध्यान दिया जाता था। तीर्थयात्री नंगे पैर चलते थे तथा दोनों सिरों पर गंगा जल से भरे कलश लटकाए हुए बाँस के डण्डे (काँवड़) ढोते थे।

- **औपनिवेशिक काल**—ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में इस यात्रा में बहुत कम हस्तक्षेप हुआ, हालाँकि यात्रा वृत्तान्तों एवं रिपोर्टों में कभी-कभार इसका दस्तावेजीकरण हुआ। रेलवे जैसे बुनियादी ढाँचे के विकास ने अप्रत्यक्ष रूप से तीर्थयात्रा मार्गों को बढ़ावा दिया।

- **स्वतन्त्रता के बाद का विकास**—1947 के बाद, बढ़ती गतिशीलता एवं बढ़ती धार्मिक चेतना के कारण काँवड़ यात्रा में अधिक लोग सम्मिलित होने लगे। यह मुख्यतः क्षेत्रीय रही, खासकर उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखण्ड एवं हरियाणा के कुछ हिस्सों में।

- **20वीं सदी के उत्तरार्ध से वर्तमान तक**—1980 एवं 1990 के दशक में, मीडिया कवरेज, धार्मिक लामबन्दी एवं राजनीतिक संरक्षण के कारण इस यात्रा में व्यापक परिवर्तन हुए। इसमें बड़े पैमाने पर लोगों की भागीदारी देखी जाने लगी तथा हर साल लाखों श्रद्धालु इसमें सम्मिलित होने लगे। ट्रकों, संगीत प्रणालियों एवं संगठित शिविरों के उपयोग ने इस आयोजन को एक बड़े पैमाने के सार्वजनिक धार्मिक उत्सव में बदल दिया। आज, यह न केवल एक भक्तिपूर्ण कार्य है, बल्कि सांस्कृतिक पहचान, युवाओं की भागीदारी एवं कभी-कभी राजनीतिक प्रतीकवाद की अभिव्यक्ति भी है।

संक्षेप में, काँवड़ यात्रा भक्ति के एक विनम्र कार्य से एक प्रमुख सामाजिक-धार्मिक आयोजन के रूप में विकसित हुई, जो भारत में आध्यात्मिक उत्साह एवं समकालीन सामाजिक गतिशीलता दोनों को मूर्त रूप देती है। पारम्परिक रूप से हिन्दू पौराणिक कथाओं पर आधारित यह तीर्थयात्रा हाल के दशकों में एक विशाल सामाजिक-धार्मिक आयोजन में तब्दील हो गई है, जिसमें भव्य जुलूस, संगीत कार्यक्रम एवं राज्य व मीडिया की व्यापक भागीदारी सम्मिलित है। यात्रा में भागीदारी एवं दृश्यता में हालिया वृद्धि इसके कारणों एवं परिणामों की समाजशास्त्रीय जाँच को आमन्त्रित करती है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. दुर्खीम, वेबर, हेबरमास एवं ग्राम्शी के तुलनात्मक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यों के माध्यम से काँवड़ यात्रा का विश्लेषण करना।
2. हाल के वर्षों में काँवड़ यात्रा की बढ़ती गति में योगदान देने वाले कारकों की जाँच करना।
3. भारत में सार्वजनिक स्थान, मीडिया, युवा संस्कृति एवं धार्मिक पहचान पर यात्रा के निहितार्थों अर्थात् काँवड़ यात्रा के समाजशास्त्रीय निहितार्थ को समझना।
4. पारम्परिक धार्मिक प्रथाएँ सामाजिक परिवर्तन की व्यापक प्रक्रियाओं के साथ कैसे अनुकूलित होती हैं तथा उन्हें कैसे प्रतिबिंबित करती हैं, इसका आलोचनात्मक मूल्यांकन करना अर्थात् काँवड़ यात्रा के सन्दर्भ में सामाजिक परिवर्तन का मूल्यांकन करना।

3. अध्ययन की शोध पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक एवं व्याख्यात्मक प्रकृति का है। यह मुख्य रूप से द्वितीयक डेटा स्रोतों पर निर्भर करता है, जिसमें विद्वानों के लेख, समाचार रिपोर्ट तथा काँवड़ यात्रा के दृश्य मीडिया कवरेज सम्मिलित हैं। सैद्धांतिक विश्लेषण शास्त्रीय एवं समकालीन समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों पर आधारित है। व्याख्यात्मक समाजशास्त्रीय विधियों का उपयोग किया गया है जो धार्मिक प्रथाओं के अर्थ, प्रदर्शन एवं सामाजिक निहितार्थों को समझने का प्रयास करती हैं। हालाँकि, इस तुलनात्मक विश्लेषण में फील्डवर्क या साक्षात्कार सम्मिलित नहीं हैं, बल्कि इसका उद्देश्य मौजूदा साहित्य एवं सांस्कृतिक अवलोकन पर आधारित एक व्यापक सैद्धांतिक समझ प्रदान करना है।

4. साहित्य की समीक्षा

कई अध्ययनों एवं विद्वानों के अवलोकनों ने विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक तथा राजनीतिक सन्दर्भों में काँवड़ यात्रा की जाँच की है। जैकबसन (2018) ने इस यात्रा को हिन्दू तीर्थयात्रा प्रथाओं के व्यापक ढाँचे में सम्मिलित किया है तथा पवित्र स्थानों के निर्माण में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला है। मोक्षदायी स्थान, हिन्दू तीर्थयात्रा परम्पराओं में केन्द्रीय विचारों में से एक है तथा यह स्थान, विशेष रूप से नदियों एवं झीलों जैसे जल निकायों से जुड़े स्थलों की मोक्षदायी फल प्रदान करने की क्षमता से सम्बन्धित है। वह हिन्दू तीर्थयात्रा के व्यापक स्वरूप, पवित्र भूगोल एवं आधुनिक पुनर्व्याख्याओं के अन्तर्गत काँवड़ यात्रा की चर्चा करते हैं। उनका अध्ययन मोक्षदायी स्थान के आख्यानों, अनुष्ठानों, इतिहास एवं संरचनाओं की पड़ताल करता है तथा यह देखता है कि यह हिन्दू धर्म का एक केन्द्रीय लक्षण कैसे बन गया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि तीर्थयात्रा के माध्यम से स्थान की शक्ति का अनुभव करना हिन्दू धर्म का एक केन्द्रीय लक्षण है।

ब्रोसियस (2005) हिन्दू राष्ट्रवाद के दृश्य एवं मीडिया प्रतिनिधित्व पर चर्चा करते हैं, जहाँ काँवड़ यात्रा जैसे आयोजन धार्मिक पहचान को स्थापित करने में एक प्रतीकात्मक भूमिका निभाते हैं। क्रिस्टियन ब्रोसियस का अध्ययन इस बात का पता लगाने का एक प्रयास है कि

'हिंदुत्व के विचारकों एवं व्यवहारवादियों ने जनमत निर्माण एवं राय बनाने पर अधिकार जताने के लिए वीडियो मीडिया का इस्तेमाल क्यों, कैसे एवं कब किया।' वह यात्रा जैसे आयोजनों के सन्दर्भ में हिन्दू राष्ट्रवादी छवियों के इर्द-गिर्द दृश्य एवं मीडिया की राजनीति का अन्वेषण करते हैं। उन्होंने तर्क दिया है कि 1980 के दशक के उत्तरार्ध से भारतीय जनता पार्टी एवं उसके सहयोगियों ने आदर्श हिन्दू जीवनशैली की परिकल्पनाओं को गढ़ने के लिए आधुनिक मीडिया, विशेष रूप से दृश्य-श्रव्य तकनीकों का जमकर दोहन किया है। स्थानीय लोकप्रिय संस्कृति के क्षेत्र से प्रमुख छवियों एवं आख्यानों को 'राजनीतिक विपणन' तथा लामबन्दी को बढ़ाने के लिए एक पैकेज में हड़प कर वस्तु बना दिया गया; ताकि लोगों के लोकप्रिय मानस को प्रभावित किया जा सके।

श्रीवास्तव (2022) इस बात का पता लगाते हैं कि कैसे यह यात्रा युवा पुरुषत्व एवं भक्ति उत्साह को व्यक्त करने का एक मंच प्रदान करती है तथा राजनीति एवं प्रदर्शन के साथ इसके जुड़ाव को रेखांकित करते हैं। उन्होंने यात्रा का विश्लेषण युवा पुरुषत्व, भक्ति पहचान एवं राष्ट्रवाद के साथ इसके जुड़ाव के मंच के रूप में किया है। श्रीवास्तव का तर्क है कि हिन्दू राष्ट्रवादी आन्दोलन पुरुषत्व का एक शक्तिशाली एवं अक्सर अति-पुरुषोचित संस्करण गढ़ता है। इसे आमतौर पर सैन्य शक्ति, नैतिक दृढ़ विश्वास तथा राष्ट्र की रक्षा करने की इच्छाशक्ति द्वारा परिभाषित किया जाता है। उन्होंने 2015 के एक लेख में इसे 'मोदी-पुरुषत्व' कहा है, जहाँ उन्होंने प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी को एक मज़बूत एवं गतिशील नेता के रूप में मीडिया में पेश किए जाने का विश्लेषण किया है।

भट्ट (2001) इस यात्रा को हिन्दू राष्ट्रवाद के उदय एवं सार्वजनिक क्षेत्रों में पहचान के सुदृढ़ीकरण के सन्दर्भ में देखते हैं। ये अध्ययन सामूहिक रूप से प्रकट करते हैं कि यह यात्रा केवल एक धार्मिक यात्रा नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक उत्पादन, पहचान वार्ता एवं राजनीतिक महत्त्व का एक सशक्त स्थल है। उन्होंने हिन्दू राष्ट्रवाद के वैचारिक आधारों का एक व्यापक अवलोकन प्रस्तुत किया है, जिसके अन्तर्गत यह यात्रा स्थित है। 1980 के दशक के प्रारम्भ से भारत में सत्तावादी हिन्दू जनान्दोलनों एवं राजनीतिक संरचनाओं का उदय, उत्तर आधुनिक काल में अन्धराष्ट्रवादी जातीय, धार्मिक एवं राष्ट्रवादी आन्दोलनों के पुनरुत्थान के बारे में बुनियादी प्रश्न उठाता है। यह पुस्तक पिछली शताब्दी के अन्त से लेकर वर्तमान तक हिन्दू राष्ट्रवाद एवं हिन्दुत्व के इतिहास एवं विचारधाराओं का विश्लेषण करती है तथा इसके प्रमुख विचारकों के सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन एवं लेखन का आलोचनात्मक मूल्यांकन करती है। हिन्दू राष्ट्रवाद इस दावे पर आधारित है कि यह भारत की आदिम एवं प्रामाणिक जातीय एवं धार्मिक परम्पराओं की एक स्वदेशी उपज है।

आज, भारत में तीर्थयात्रा पर्यटन का एक बढ़ता हुआ ज्वार है, जो हिन्दुओं में अपनी पहचान स्थापित करने की बढ़ती इच्छा से सम्बन्धित हो सकता है (राणा पी. बी. सिंह : भारत; तथा मार्टिन जे0 हैघ : यू0के0)। आज, तीर्थयात्रा एवं धार्मिक पर्यटन भारत के मध्यम वर्ग के विकास के साथ-साथ तेजी से फैल रहे हैं, जिससे पवित्र एवं अपवित्र का मिश्रण करने वाले नए

परिदृश्य बन रहे हैं। यात्रियों का लगभग तीन-चौथाई खर्च पर्यटन अवसंरचना के समर्थन में जाता है तथा कई प्राचीन पवित्र स्थल रिसॉर्ट्स में तब्दील हो रहे हैं, जहाँ आध्यात्मिकता एवं अवकाश गतिविधियों का मिश्रण है।

5. समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यों के सन्दर्भ में काँवड़ यात्रा का विश्लेषण

काँवड़ यात्रा का विश्लेषण निम्नलिखित समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यों का उपयोग करके किया जा सकता है—

5·1 दुर्खीम का परिप्रेक्ष्यः सामूहिक उत्साह एवं सामाजिक एकजुटता

इमाइल दुर्खीम ने अपनी पुस्तक 'द एलीमेंट्री फॉर्म्स ऑफ रिलीजियस लाइफ' में धर्म को एक ऐसी सामाजिक संस्था के रूप में देखा जो सामूहिक चेतना एवं सामाजिक एकीकरण को सुदृढ़ करती है। 'सामूहिक उत्साह' (Collective effervescence) की उनकी अवधारणा बताती है कि कैसे साझा अनुष्ठान भावनात्मक एकता एवं सामाजिक सामंजस्य उत्पन्न करते हैं। काँवड़ यात्रा इस विचार की एक जीवन्त अभिव्यक्ति है। काँवड़ियों के बीच समकालिक मन्त्रोच्चार, सामूहिक पदयात्रा एवं पारस्परिक सहायता एक ऐसा पवित्र अनुभव निर्मित करती है जो व्यक्तिवाद से परे है तथा प्रतिभागियों को एक नैतिक समुदाय में बाँधती है। यह भावनात्मक ऊर्जा न केवल धार्मिक पहचान को सुदृढ़ करती है, बल्कि ग्रामीण एवं निम्न-मध्यम वर्ग के युवाओं के बीच सामाजिक एकजुटता भी प्रदान करती है, जिन्हें इस यात्रा में उद्देश्य एवं अपनेपन का एहसास होता है।

सामूहिक उत्साह में, सामुदायिक धार्मिक अनुष्ठान एक प्रगाढ़ भावनात्मक स्थिति उत्पन्न करते हैं जो सामाजिक बन्धनों को सुदृढ़ करती है। काँवड़ यात्रा इसका एक स्पष्ट उदाहरण है। समकालिक मन्त्रोच्चार, सामूहिक पदयात्रा, नृत्य एवं साझा कष्ट प्रतिभागियों के बीच एकता की एक प्रबल भावना का निर्माण करते हैं। यह साझा अनुभव न केवल धार्मिक, बल्कि क्षेत्रीय एवं वर्ग-आधारित सामूहिक पहचान को भी मजबूत करता है। कई ग्रामीण एवं निम्न-मध्यम वर्ग के युवाओं के लिए, इस यात्रा में भाग लेना आध्यात्मिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त होने का एक तरीका है, जो भक्ति की एक विशाल अभिव्यक्ति में एकजुट होते हैं।

5·2 वेबर का परिप्रेक्ष्यः पारम्परिक अधिकार एवं आधुनिक दृश्य

मैक्स वेबर का सत्ता (अधिकार) सिद्धान्त—पारम्परिक, चमत्कारिक (करिश्माई) एवं तार्किक वैधानिक (विधि-तर्कसंगत)—यह समझाने में सहायता करता है कि कैसे यात्रा पारम्परिक धार्मिक प्रथाओं को आस्था की आधुनिक अभिव्यक्तियों के साथ मिश्रित करती है। पारम्परिक हिन्दू प्रथाओं में निहित, यात्रा में लाउडस्पीकर, डीजे, सोशल मीडिया प्रसारण एवं राज्य तन्त्र के साथ समन्वय जैसे आधुनिक तत्वों को तेजी से सम्मिलित किया गया है। पारम्परिक भक्ति एवं आधुनिक दृश्य का यह मिश्रण वेबर के 'चमत्कार के नियमितीकरण' के विचार को दर्शाता है, जहाँ आध्यात्मिक नेतृत्व एवं अभिव्यक्ति के नए रूप प्राचीन परम्पराओं के अधिकार को कम किए बिना उन्हें आधुनिक बनाते हैं। सोशल मीडिया पर नए धार्मिक नेताओं एवं प्रभावशाली

लोगों का चमत्कारिक आकर्षण, अनुष्ठान की पारम्परिक वैधता के साथ मिलकर, समकालीन सामाजिक वास्तविकताओं के अनुकूल धार्मिक अनुभव का एक संकर रूप तैयार करता है। यह वेबर के इस विचार का उदाहरण है कि कैसे धार्मिक व्यवहार प्रतीकात्मक शक्ति को बनाए रखते हुए सामाजिक परिवर्तन के अनुकूल होता है।

5·3 हैबरमास का परिप्रेक्ष्यः धर्म एवं सार्वजनिक क्षेत्र

जुर्गन हैबरमास ने सार्वजनिक क्षेत्र की अवधारणा तर्कसंगत-आलोचनात्मक बहस के लिए एक स्थान के रूप में की, जो आदर्श रूप से दबाव एवं वर्चस्व से मुक्त हो। काँवड़ यात्रा सड़कों, कस्बों एवं बुनियादी ढाँचे को अस्थायी रूप से अनुष्ठान क्षेत्रों में बदलकर इस सार्वजनिक स्थान को पुनर्परिभाषित करती है। धर्मनिरपेक्ष स्थान का यह पुनःपवित्रीकरण सार्वजनिक क्षेत्र की तटस्थता को चुनौती देता है, एक धार्मिक पहचान को अन्य पर विशेषाधिकार देता है। यद्यपि यह प्रतिभागियों के बीच समुदाय को बढ़ावा देता है, तथापि यह समावेशिता, धर्मनिरपेक्ष शासन एवं बहुलवादी समाज में धार्मिक अभिव्यक्ति की सीमाओं पर सवाल भी उठाता है। तर्कसंगत नागरिक सम्वाद पर भावनात्मक, प्रदर्शनकारी धार्मिकता का प्रभुत्व सार्वजनिक विमर्श की प्रकृति में बदलाव का संकेत देता है। काँवड़ यात्रा जैसे भावनात्मक रूप से आवेशित, धार्मिक दृश्यों के उदय से हैबरमास की सार्वजनिक क्षेत्र की अवधारणा को चुनौती मिलती है। यह श्रद्धालुओं के बीच सामुदायिकता को बढ़ावा तो देता है, लेकिन समावेशिता पर भी सवाल उठाता है, खासकर एक बहु-धार्मिक, धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्र में। यह यात्रा तर्कसंगत विमर्श से पहचान-आधारित सहभागिता की ओर एक बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है, जो हैबरमास के एक विचारशील लोकतान्त्रिक स्थान के दृष्टिकोण को जटिल बनाती है।

5·4 ग्राम्शी का परिप्रेक्ष्यः सांस्कृतिक आधिपत्य एवं पहचान की राजनीति

आन्तोनियो ग्राम्शी की सांस्कृतिक आधिपत्य की अवधारणा—जहाँ प्रमुख विचारधाराओं को सांस्कृतिक संस्थाओं एवं रोजमर्रा की प्रथाओं के माध्यम से बनाए रखा जाता है—यात्रा के राजनीतिक निहितार्थों के वैचारिक आयामों की जाँच के लिए एक महत्त्वपूर्ण ढाँचा प्रदान करती है। जैसे-जैसे राज्य सुरक्षा, बुनियादी ढाँचे एवं राजनीतिक समर्थन के माध्यम से तीर्थयात्रा का समर्थन एवं सुविधा प्रदान करता है—यह हिन्दू बहुसंख्यकवादी पहचान को मजबूत करने का एक स्थल बन जाता है। सार्वजनिक जीवन में एक धार्मिक परम्परा का यह सामान्यीकरण अल्पसंख्यक प्रथाओं को हाशिए पर डालता है तथा प्रमुख सांस्कृतिक आख्यानों को मजबूत करता है। इसलिए, यह यात्रा आधिपत्य नियन्त्रण के एक उपकरण के रूप में कार्य करती है, जो बहुसंख्यकवादी मूल्यों को रोजमर्रा के जीवन के ताने-बाने में समाहित करती है तथा राष्ट्रवादी विचारधाराओं के अनुरूप जन चेतना को आकार देती है। यह दर्शाती है कि सामाजिक नियन्त्रण बनाए रखने में धर्म कैसे वैचारिक भूमिका निभा सकता है।

5·5 मीडिया, पुरुषत्व एवं आस्था का मीडियाकरण

मीडिया एवं युवा संस्कृति की भूमिका यात्रा की हालिया गति के पीछे केन्द्रीय है। भक्ति डीजे, सोशल मीडिया सामग्री एवं वायरल वीडियो के प्रसार ने तीर्थयात्रा को एक प्रदर्शनकारी

आयोजन में बदल दिया है, जो आध्यात्मिकता को मनोरंजन के साथ मिश्रित करता है। कई युवाओं के लिए, यात्रा शारीरिक सहनशक्ति, पुरुषत्व एवं धार्मिक उत्साह प्रदर्शित करने के एक क्षेत्र के रूप में कार्य करती है। आस्था का यह मीडियाकरण डिजिटल युग में धर्म के उपभोग एवं प्रदर्शन के तरीके में व्यापक बदलाव को दर्शाता है, जो जुड़ाव के नए तरीकों का निर्माण करता है जो पारम्परिक विश्वास को समकालीन जीवन शैली संस्कृति के साथ जोड़ते हैं।

इस प्रकार, यह देखा जा सकता है कि काँवड़ यात्रा की बढ़ती गति भारत में व्यापक सामाजिक परिवर्तनों का प्रतीक है। यह आधुनिक रूपों में पारम्परिक पहचानों की पुनःपुष्टि, सार्वजनिक जीवन में धर्म के राजनीतिकरण एवं पवित्र स्थान की पुनर्परिभाषा को दर्शाता है। दुर्खीम, वेबर, हैबरमास एवं ग्राम्शी के तुलनात्मक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों के माध्यम से, यह यात्रा केवल एक तीर्थयात्रा के रूप में ही नहीं, बल्कि एक जटिल सामाजिक परिघटना के रूप में उभरती है जहाँ भक्ति, पहचान, शक्ति एवं आधुनिकता एक-दूसरे से जुड़ती हैं। अतः यह न केवल धर्म के विद्वानों से, बल्कि समकालीन भारत में सामाजिक परिवर्तन की गतिशीलता से जुड़े लोगों से भी आलोचनात्मक ध्यान की माँग करती है।

6. समकालीन युग में काँवर यात्रा में बढ़ती गति

काँवर यात्रा, एक पारम्परिक हिन्दू तीर्थयात्रा है जिसमें भक्त (काँवरिये) भगवान शिव को अर्पित करने के लिए पवित्र गंगा जल ले जाते हैं। हाल के वर्षों में इसकी गति में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। इस पुनरुत्थान का श्रेय कई सामाजिक-राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं तकनीकी कारकों को दिया जा सकता है। हाल के वर्षों में काँवड़ यात्रा की बढ़ती गति में योगदान देने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं—

1. **धार्मिक भावना एवं सांस्कृतिक अभिकथन में वृद्धि**—हिन्दू धार्मिक प्रथाओं एवं पहचान की राजनीति के व्यापक पुनरुत्थान ने काँवर यात्रा जैसी तीर्थयात्राओं के प्रति जनता के उत्साह को बढ़ाया है। यह आयोजन कई युवा प्रतिभागियों के लिए सांस्कृतिक गौरव एवं भक्ति का प्रतीक बन गया है।

2. **राजनीतिक प्रोत्साहन एवं समर्थन**—कई राज्य सरकारों, खासकर उत्तर भारत (जैसे उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड एवं हरियाणा) ने इस यात्रा को सक्रिय रूप से सुगम एवं समर्थित बनाया है। इन उपायों में बेहतर बुनियादी ढाँचा, सुरक्षा व्यवस्था एवं आयोजन के प्रचार-प्रसार हेतु सार्वजनिक घोषणाएँ तथा भागीदारी बढ़ाना सम्मिलित है।

3. **सोशल मीडिया एवं डिजिटल लामबन्दी (मोबिलाइजेशन)**—व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम एवं यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म ने व्यापक प्रचार, समन्वय एवं सामुदायिक जुड़ाव को सम्भव बनाया है। लाइव प्रसारण, भक्ति संगीत वीडियो एवं वायरल चुनौतियों ने इस आयोजन को युवा दर्शकों के लिए और भी आकर्षक बना दिया है।

4. **बेहतर बुनियादी ढाँचा एवं सुरक्षा**—सरकारों ने सड़कों, जल सुविधाओं, चिकित्सा शिविरों एवं भीड़ प्रबन्धन में निवेश किया है, जिससे तीर्थयात्रा अधिक सुलभ एवं

सुरक्षित हो गई है। पुलिस एवं स्वयंसेवी संगठनों की उपस्थिति एक नियन्त्रित वातावरण सुनिश्चित करती है, यहाँ तक कि परिवारों को भी इसमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती है।

5. **लोकप्रिय संस्कृति एवं जन आकर्षण**—भक्ति डीजे, संगीत ट्रक, नारे एवं नृत्य समूहों ने यात्रा को एक उत्सव एवं सामुदायिक उत्सव में बदल दिया है। पारम्परिक अनुष्ठानों के साथ आधुनिक तत्व बड़े समूहों, विशेष रूप से ग्रामीण एवं छोटे शहरों के युवाओं को आकर्षित करते हैं।
6. **पहचान एवं जुड़ाव**—कई युवाओं के लिए, यह यात्रा समुदाय, पहचान एवं उद्देश्य की भावना प्रदान करती है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ मनोरंजन या रोजगार के अवसर सीमित हैं। धार्मिक भक्ति का प्रदर्शन पुरुष ऊर्जा एवं आध्यात्मिक अनुशासन की अभिव्यक्ति बन जाता है।
7. **कोविड-19 का विराम एवं महामारी के बाद का पुनरुत्थान**—कोविड-19 महामारी के दौरान यात्रा प्रतिबन्धित थी, लेकिन लॉकडाउन के बाद के वर्षों में इसमें उत्साह एवं भागीदारी में नाटकीय वृद्धि देखी गई है।
8. **आर्थिक अवसर**—स्थानीय विक्रेताओं, ट्रांसपोर्टरों एवं छोटे व्यवसायों को आर्थिक लाभ होता है, जिससे इस आयोजन के समर्थन एवं विकास को बढ़ावा मिलता है।

7. काँवड़ यात्रा के समाजशास्त्रीय निहितार्थ

काँवड़ यात्रा में हालिया तेजी के कई समाजशास्त्रीय निहितार्थ हैं, जो भारतीय समाज में, विशेष रूप से धार्मिक अभिव्यक्ति, पहचान निर्माण, वर्ग गतिशीलता एवं सार्वजनिक स्थान के सन्दर्भ में, गहरे बदलावों को दर्शाते हैं। काँवड़ यात्रा के प्रमुख समाजशास्त्रीय निहितार्थ एवं प्रभाव इस प्रकार हैं—

1. **सामूहिक धार्मिक पहचान को मजबूत करना**—यह यात्रा, विशेष रूप से युवाओं के बीच, एक साझा हिन्दू पहचान को मजबूत करती है तथा धार्मिकता के एक दृश्यमान एवं सहभागी के रूप में कार्य करती है। यह अपनेपन, एकता एवं अपने विश्वास पर गर्व की भावना पैदा करती है, जो अक्सर बहुलवादी शहरी स्थानों में सांस्कृतिक प्रभुत्व का सार्वजनिक दावा बन जाती है।
2. **पुरुषत्व एवं युवा संस्कृति**—इसमें भागीदारी अक्सर युवा पुरुषों की होती है तथा यह यात्रा शारीरिक सहनशक्ति, पुरुषत्व एवं अनुष्ठानिक अनुशासन का एक माध्यम प्रदान करती है। आक्रामक मुद्रा, समूह प्रदर्शन एवं तेज भक्ति संगीत को कभी-कभी सार्वजनिक क्षेत्र में पुरुषत्व के प्रदर्शन से जोड़ दिया जाता है।
3. **धर्म का राजनीतिकरण**—राज्य के संरक्षण एवं राजनीतिक दलों द्वारा प्रतीकात्मक विनियोग के साथ, इस आयोजन का राजनीतिकरण तेजी से बढ़ रहा है, जिससे हिन्दुत्व

के आख्यानों को बल मिल रहा है। यह एक ऐसा स्थान बन जाता है जहाँ धार्मिक राष्ट्रवाद का प्रदर्शन होता है तथा साम्प्रदायिक विभाजन बढ़ सकता है, खासकर जब इसे अन्य धार्मिक त्योहारों या स्थानों के साथ जोड़ा जाता है।

4. **सार्वजनिक स्थान का पुनःदावा एवं रूपान्तरण**—काँवड़ियों द्वारा राजमार्गों, कस्बों एवं शहरी स्थानों पर अस्थायी कब्जा रोजमर्रा के परिदृश्य को एक धार्मिक क्षेत्र में बदल देता है। सार्वजनिक स्थान का यह पुनर्गठन अक्सर गतिशीलता, धर्मनिरपेक्षता एवं कानून प्रवर्तन प्राथमिकताओं से जुड़े मौजूदा मानदण्डों को चुनौती देता है।
5. **वर्ग एवं ग्रामीण अभिकथन**—कई प्रतिभागी निम्न-मध्यम या श्रमिक वर्ग की ग्रामीण पृष्ठभूमि से आते हैं। यह यात्रा अन्यथा बहिष्कृत शहरी परिवेश में सशक्तिकरण एवं दृश्यता की भावना प्रदान करती है। यह एक किफायती एवं जमीनी तीर्थयात्रा भी प्रदान करती है, जो कुलीन धार्मिक पर्यटन के विपरीत है, इस प्रकार यह धार्मिकता के एक निचले स्तर का प्रतिनिधित्व करती है।
6. **मीडिया एवं दृश्य**—यह यात्रा एक दृश्य बन गई है, जिसे मीडिया कवरेज, सोशल मीडिया पोस्ट, भक्ति डीजे एवं वायरल वीडियो ने और बढ़ा दिया है। भक्ति की यह दृश्यता संस्कृति प्रदर्शनात्मक धार्मिकता की ओर बदलाव को दर्शाती है, जहाँ आध्यात्मिकता मनोरंजन एवं आत्म-प्रचार के साथ जुड़ती है।
7. **नागरिक बुनियादी ढाँचे पर दबाव**—भागीदारी में भारी उछाल अक्सर यातायात व्यवधान, स्वच्छता के मुद्दों एवं कानून-व्यवस्था की चुनौतियों का कारण बनता है। तीर्थयात्रियों को दिया जाने वाला तरजीही व्यवहार कभी-कभी अन्य नागरिकों में नाराजगी का कारण बनता है, जिससे सार्वजनिक सेवाओं तक पहुँच में समानता पर सवाल उठते हैं।
8. **अन्य समुदायों के साथ तनाव**—कुछ काँवड़ जुलूसों की मुखर प्रकृति, विशेष रूप से तेज संगीत एवं सड़क अवरोधों के साथ, साम्प्रदायिक तनाव पैदा कर सकती है, खासकर मिश्रित आबादी वाले क्षेत्रों में। यह भारत के समकालीन सामाजिक-राजनीतिक माहौल में अन्तर-सामुदायिक सम्बन्धों की व्यापक नाजुकता को दर्शाता है।

काँवड़ यात्रा पहचान की राजनीति, शहरी परिवेश, वर्गीय अभिमुखीकरण एवं आस्था के माध्यमीकरण में बदलावों को प्रतिबिंबित करने वाला एक समाजशास्त्रीय दर्पण है। यह सह-अस्तित्व, शासन एवं सार्वजनिक जीवन में धर्म की भूमिका से जुड़े महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाता है।

8. काँवड़ यात्रा एवं सामाजिक परिवर्तन

काँवड़ यात्रा का बढ़ता चलन समकालीन भारत में महत्त्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। यह परिवर्तन समाज के विभिन्न आयामों—धार्मिक प्रथाओं, पहचान की राजनीति, सार्वजनिक व्यवहार, वर्गीय गतिशीलता एवं मीडिया संस्कृति—में दिखाई देता है। इसकी चर्चा अग्रलिखित उप-शीर्षकों के अन्तर्गत की जा सकती है—

1. **धार्मिक प्रथाओं में परिवर्तन**—पहले, यह यात्रा एक शान्त, व्यक्तिगत या छोटे समूह की तीर्थयात्रा थी; अब यह एक सामूहिक, उत्सवपूर्ण एवं अत्यधिक दृश्यमान अनुष्ठान बन गई है। यह व्यक्तिगत आध्यात्मिकता से सार्वजनिक रूप से की जाने वाली धार्मिकता की ओर बदलाव को दर्शाता है, यह दर्शाता है कि कैसे धार्मिक अभिव्यक्ति अधिक सामूहिक एवं प्रदर्शनकारी होती जा रही है।
2. **पहचान का दावा**—यह यात्रा हिन्दू पहचान को व्यक्त करने का एक मंच बन गई है, खासकर ग्रामीण एवं निम्न-मध्यम वर्ग के युवाओं के बीच। यह उन समुदायों के बढ़ते सामाजिक एवं सांस्कृतिक दावे का प्रतीक है जो पहले कुलीन धार्मिक प्रथाओं के हाशिये पर रहते थे।
3. **सार्वजनिक स्थान का बदलता उपयोग**—सड़कें, राजमार्ग एवं कस्बे अस्थायी रूप से धार्मिक गलियारों में तब्दील हो रहे हैं, जो सार्वजनिक स्थान के उपयोग एवं दावे के तरीके को नए सिरे से परिभाषित कर रहे हैं। यह धर्म एवं सार्वजनिक जीवन के बीच सम्बन्धों में बदलाव की ओर इशारा करता है, जहाँ धार्मिक आयोजन नागरिक जीवन पर हावी हो रहे हैं, यहाँ तक कि दूसरों को असुविधा की कीमत पर भी।
4. **डिजिटल एवं मीडिया का प्रभाव**—सोशल मीडिया ने यात्रा को भक्ति के एक दृश्ये में बदल दिया है—जिसे रिकॉर्ड किया जाता है, साझा किया जाता है तथा ऑनलाइन मनाया जाता है। यह दर्शाता है कि कैसे धार्मिक प्रथाओं को प्रौद्योगिकी एवं दृश्य संस्कृति द्वारा नया रूप दिया जा रहा है, जो आस्था के व्यापक माध्यमीकरण को दर्शाता है।
5. **युवा भागीदारी एवं पुरुषोचित संस्कृति**—यह यात्रा उन युवाओं के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रही है जो भागीदारी के माध्यम से पहचान, शक्ति एवं उद्देश्य पाते हैं। यह युवा संस्कृति में एक सामाजिक परिवर्तन का संकेत देता है, जहाँ पारम्परिक धार्मिक अनुष्ठानों को ऊर्जा, प्रदर्शन तथा समूह व्यवहार के नए रूपों के साथ अपनाया जा रहा है।
6. **राज्य एवं राजनीतिक भागीदारी**—बढ़ती सरकारी सुविधा एवं राजनीतिक प्रतीकवाद धर्म एवं राजनीति के बीच बढ़ते तालमेल को दर्शाता है। यह धर्मनिरपेक्ष शासन से एक ऐसे मॉडल की ओर बदलाव का प्रतीक है जहाँ धार्मिक बहुसंख्यकवाद सार्वजनिक नीति को प्रभावित करता है।
7. **अनुष्ठान से जन आन्दोलन तक**—यात्रा का पैमाना, दृश्यता एवं संचालन अब एक मात्र धार्मिक कृत्य के बजाय एक सामाजिक आन्दोलन या उत्सव जैसा दिखता है। यह धार्मिक अभिव्यक्ति के लोकतन्त्रीकरण को दर्शाता है, जिसमें आम लोग बड़े पैमाने पर अनुष्ठान गतिविधि में सम्मिलित होते हैं।

यह स्पष्ट है कि काँवड़ यात्रा की बढ़ती लोकप्रियता सामाजिक परिवर्तन का संकेत देती है। यह निम्नलिखित में परिलक्षित होता है—

- दैनिक जीवन में धर्म का सार्वजनिक रूप से पुनः प्रतिपादन,
- आस्था को आकार देने में मीडिया की बढ़ती भूमिका,

- धार्मिक समूहों द्वारा नागरिक स्थान का पुनर्निर्माण, तथा
- सामूहिक पहचान एवं क्रिया के नए रूपों का उदय।

यह परिवर्तन जटिल है—कुछ लोगों के लिए सशक्तीकरणकारी, लेकिन सम्भावित रूप से बहिष्कारकारी या संघर्ष-प्रवण भी—तथा इसलिए यह आलोचनात्मक समाजशास्त्रीय ध्यान देने योग्य है।

9. निष्कर्षः सामाजिक परिवर्तन के दर्पण के रूप में अनुष्ठान

काँवड़ यात्रा, अपने विकसित रूप में, केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है—यह समकालीन भारतीय समाज का दर्पण है। यह युवा पहचान, वर्ग सशक्तिकरण, डिजिटल धार्मिकता, सार्वजनिक स्थानों पर अन्तर्क्रिया एवं राजनीतिक विमर्श में बदलावों को उजागर करती है। दुर्खीम इसके द्वारा निर्मित भावनात्मक एकता पर प्रकाश डालते हैं, वेबर बताते हैं कि पारम्परिक प्रथाएँ आधुनिकता के साथ कैसे तालमेल बिठाती हैं, हैबरमास लोकतान्त्रिक स्थान पर इसके प्रभावों के बारे में चेतावनी देते हैं तथा ग्राम्शी इसके वैचारिक कार्यों को उजागर करते हैं। ये सभी ढाँचे हमें यात्रा को न केवल एक तीर्थयात्रा के रूप में, बल्कि 21वीं सदी के भारत में समाजशास्त्रीय परिवर्तन के प्रतीक के रूप में समझने में सहायता करते हैं।

सन्दर्भ-सूची

Bhatt, C., **Hindu Nationalism: Origins, Ideologies and Modern Myths**, Oxford: Berg Publishers, 2001.

Brosius, C., Empowering Visions: The Politics of Representation in Hindu Nationalism, London: Anthem Press, 2005.

Durkheim, É., **The Elementary Forms of Religious Life**, New York: The Free Press, 1912.

Gramsci, A., **Selections from the Prison Notebooks**, New York: International Publishers, 1971.

Habermas, J., **The Structural Transformation of the Public Sphere: An Inquiry into a category of Bourgeois Society,** Cambridge: Polity, 1989.

Jacobsen, K. A. (ed.), **Pilgrimage in the Hindu Tradition: Salvific Space**, London and New York: Routledge, 2018.

Srivastava, S., ''Faith and Masculinity: The New Politics of Devotion'', **Economic and Political Weekly**, 57(4), 22 Jan 2022.

Weber, M., **Economy and Society**, Berkeley: University of California Press, 1922. ★

https://doi.org/10.62047/JNDH.2025.10.31.66